

# डॉ. डोनाल्ड फाउलर, पुराने नियम की पृष्ठभूमि, व्याख्यान 16, राजत्व का धर्मशास्त्र

© 2024 डॉन फाउलर और टेड हिल्डेब्रांट

यह पुराने नियम की पृष्ठभूमि पर अपने शिक्षण में डॉ. डॉन फाउलर हैं। यह सत्र 16 है, राजत्व का धर्मशास्त्र।

अच्छा, पुनः स्वागत है।

मुझे लगता है कि हम पाठ्यक्रम के सबसे महत्वपूर्ण हिस्सों में से एक, जो मैं आपके सामने प्रस्तुत कर रहा हूँ, शुरू करने के लिए तैयार हैं। मैं ऐसा इसलिए कह रहा हूँ क्योंकि हम यह दिखाना चाहते हैं कि पुराने नियम की दुनिया को समझने से हमें बाइबिल के पाठ को समझने में कैसे मदद मिल सकती है, और हम सोचते हैं कि यह ईश्वर का सम्मान है, और निश्चित रूप से यह लोगों को भ्रमित करने से बचने में भी मदद करता है। तो, इस घंटे के हमारे व्याख्यान में, और यह अगले वीडियो में भी आ सकता है, हम उस पर बात करने जा रहे हैं जो मुझे लगता है कि सभी पृष्ठभूमि अवधारणाओं में से सबसे महत्वपूर्ण है, और वह अवधारणा राजत्व है।

तो, हमने आपको पिछली कक्षा की अवधि या आखिरी वीडियो के बारे में बताया था, मुझे कहना चाहिए, हमने आपको बताया था कि जब हम न्यायाधीशों की पुस्तक, न्यायाधीशों की उस समयावधि को एक आदर्श धर्मतंत्र में बदलने का प्रयास करते हैं तो हम गलती करते हैं। और इसलिए, हम एक प्रकार की अजीब-झटकेदार प्रस्तुति करने जा रहे हैं। मैं उम्मीद कर रहा हूँ कि आप इसे समझ सकते हैं, लेकिन प्रस्तुति आपको यह दिखाने के लिए डिज़ाइन की गई है कि जैसे बाइबिल की कहानी की कथा ऐतिहासिक किताबों में सामने आती है, वह निश्चित रूप से, उत्पत्ति, निर्गमन, लेविटस, संख्याएं, व्यवस्थाविवरण, जोशुआ होगी, न्यायाधीश, और फिर पहला और दूसरा सैमुअल।

यह पाठ हमें दैवीय पूर्ति के रूप में राजत्व की अवधारणा की ओर ले जा रहा है। और इसलिए, कल, या पिछले वीडियो में, मैं आपको बता रहा था कि न्यायाधीशों को सही ढंग से समझना कितना महत्वपूर्ण है क्योंकि हालांकि यह न्यायाधीशों का एकमात्र धर्मशास्त्र नहीं है, मुझे लगता है कि न्यायाधीशों के सबसे महत्वपूर्ण हिस्सों में से एक हमें सिखा रहा है ऐसा तब होता है जब दो नकारात्मक घटित होते हैं। जब कोई राजा नहीं होता है, तो हर कोई वही करता है जो सही है, और मैंने आपको बताया था कि वह अराजकता थी जिसके परिणामस्वरूप अराजकता हुई।

हालाँकि, दूसरी समस्या, जो न्यायाधीश हमारे सामने पेश कर रहे हैं, वह यह समस्या है कि इस्राएली, या पुराने नियम की शब्दावली का उपयोग करें, वास्तव में एक कठोर गर्दन वाले लोग हैं। और जब हम बाइबिल के पाठ को ध्यान से पढ़ते हैं, तो यह स्पष्ट हो जाता है कि समस्या न केवल तब होती है जब आपके पास कोई न्यायाधीश, राजा नहीं होता है, बल्कि दूसरी बात, वास्तविक समस्या तब होती है जब आप अपने पास मौजूद राजा का अनुसरण नहीं करते हैं। और फिर मुझे लगता है कि मैं इसमें एक तीसरा जोड़ सकता हूँ क्योंकि यह मेरे दिमाग में आता

है, और यही वह समस्या है जो आपके पास होती है जब आपके पास जो राजा होता है वह एक बुरा राजा होता है जब वह ऐसा व्यक्ति होता है जो कानून को बढ़ावा नहीं देता है और उसका पालन नहीं करता है और इसका पालन करो और भगवान की सेवा करो.

इस बारे में हम कैसे सोचते हैं, इसके लिए एक अलग प्रतिमान आपके सामने रख सकता हूँ। मेरा प्रतिमान कुछ इस प्रकार है: राजत्व ईश्वर की योजना का एक अनिवार्य हिस्सा है, जो सीधे बगीचे तक जाता है।

राजत्व की घटना, जब प्राचीन विश्व के धर्मशास्त्र में ठीक से समझी जाती है, तो यह है कि राजा ईश्वर का अद्वितीय सेवक होता है। और यह कि उसे भगवान की ओर से शासन करना है, या प्राचीन निकट पूर्वी लोगों, देवताओं के मामले में, और उसे एक पवित्र प्राणी होना है क्योंकि वह देवताओं की सेवा कर रहा है। तो, हम जो देखते हैं वह यह है कि मॉडल खुद को पुराने नियम में दोहराता हुआ प्रतीत होता है क्योंकि भगवान का संबंध राजत्व स्थापित करने से है; यह एक ईश्वरीय वादे का हिस्सा है।

और इसलिए, जैसे ही हम उस पर गौर करने के लिए तैयार होते हैं, मैं आपको एक ऐसे काम के बारे में बताना चाहता हूँ जिसे मैंने व्यवस्थित किया है और वह इस प्रकार है। संपूर्ण कानून नैतिक है, यह एक चार्ट है जिसे डिक एवरबेक नामक मेरे एक सहकर्मी और मित्र द्वारा बनाया गया था, और फिर, निश्चित रूप से, मैंने वर्षों तक इसके साथ काम किया है और इसे समझाया है जैसा कि मुझे लगता है कि चीजें उपयुक्त हैं। यह हमें कुछ सरल सिद्धांतों की याद दिलाता है जो पुराने नियम के रिकॉर्ड को एकजुट करते हैं और, मुझे लगता है, नए नियम के रिकॉर्ड को भी एकजुट करते हैं।

तो, वह सरल सिद्धांत क्या होगा? खैर, सबसे महत्वपूर्ण में से एक, किसी भी तरह से पुराने नियम का एकमात्र एकीकृत कारक वाचा नहीं है। वाल्थर आइक्रोड्ट ने अपने शानदार थियोलॉजी ऑफ द ओल्ड टेस्टामेंट में सिखाया कि वाचा पुराने टेस्टामेंट का केंद्र थी। अधिकांश लोग सोचते हैं कि ईच ने इसे बढ़ा-चढ़ाकर कहा है, लेकिन हम क्या कहेंगे कि पुराने नियम की कथा में, एक दैवीय योजना है और कथा उस योजना की पूर्ति की दिशा में आंदोलन को दर्ज कर रही है।

तो, ईश्वरीय योजना की एक विशेषता यह है कि ईश्वर अनुबंध और कई अनुबंध बनाता है, और हम जो प्रस्ताव देंगे वह यह है कि उन अनुबंधों में से सबसे महत्वपूर्ण अब्राहमिक अनुबंध था। अब्राहीम वाचा एक ऐसी वाचा है जिसके वादे, मेरी राय में, अब्राहीम वाचा के वादे पूरी बाइबल के बाकी हिस्सों को महान सामंजस्य प्रदान करते हैं। और यदि हम उन वादों को देखें, तो आप देख सकते हैं कि वाचा में, जिसे अध्याय 12 में बनाया और पेश किया गया है, और फिर अध्याय 15 में समझाया गया है, और फिर अध्याय 17 में फिर से देखा गया है, आप देख सकते हैं कि परमेश्वर ने अब्राहीम के साथ वाचा में वादा किया था चार चीजें जो शेष इतिहास के लिए अब्राहीम और उसके सभी वंशजों से की गई वाचा और उसके वादों के साथ रहेंगी।

वे चार वादे पुराने नियम की कथा को समझने में महत्वपूर्ण हैं। तो, वे चार क्या हैं? खैर, एक अर्थ में, संतान के संबंध में परमेश्वर ने अब्राहीम से जो वादे किए थे, वे उत्पत्ति 1 और 2 में उन बातों के

साथ मिलते हैं जो परमेश्वर ने आदम से कही थीं। उत्पत्ति 1 और 2 में, परमेश्वर ने आदम और हव्वा से कहा कि फूलों-फलों, बड़ों और पृथ्वी को भर दो।

जब हम निर्गमन अध्याय 1 में जाते हैं, तो पाठ हमें बताता है कि इस्राएली फलदायी थे, और उनकी संख्या बढ़ गई थी, और उन्होंने भूमि को भर दिया था, यह सब उन बयानों पर वापस जाता है जो भगवान ने आदम और हव्वा को दिए थे। परन्तु जब उन्होंने भूमि को भर दिया, तो यह हमें बताता है, निःसंदेह, यह वह भूमि नहीं है जिसका वादा परमेश्वर ने इब्राहीम से किया था। तो, शुरू में हम जो देखते हैं, वह इब्राहीम से कई बच्चों के वादे के बीच संबंध है, अनगिनत बच्चे, सितारों को देखो और उन्हें गिनें, समुद्र की रेत को देखो, रेत को गिनो।

यदि आप ऐसा कर सकते हैं, तो आप उन वंशजों की संख्या गिन सकते हैं जिन्हें परमेश्वर इब्राहीम को आशीर्वाद देगा। इसलिए, उन्होंने उससे अनगिनत बच्चे पैदा करने का वादा किया। दूसरे, उसने इब्राहीम को भूमि देने का वादा किया।

वास्तव में, जिस भूमि का वादा परमेश्वर ने इब्राहीम से किया था वह एक ऐसी भूमि है जो यहाँ से लेकर उत्तर तक फैली हुई है। मैं यहाँ आ सकता हूँ और इसे आपको स्क्रीन पर दिखा सकता हूँ। यह यहाँ से परात नदी के सिरे तक फैला हुआ था, और फिर यह मिस्र के नाले तक चला गया, जो यहीं है।

इसलिए, परमेश्वर ने इब्राहीम को वह सारी भूमि देने का वादा किया। भूमि के बारे में उस वादे ने चर्च के लिए कुछ हद तक विभाजनकारी व्याख्यात्मक पहली पैदा कर दी है, क्योंकि प्राचीन काल में, वह कभी भी सचमुच पूरा नहीं हुआ था। इब्राहीम ने वास्तव में उस भूमि पर कभी निवास नहीं किया, और उसके वंशजों ने फरात नदी तक केवल थोड़े समय के लिए ही निवास किया।

तो इससे व्याख्यात्मक चुनौतियों में से एक का जन्म हुआ है। क्या परमेश्वर आज इब्राहीम के वंशजों से किया गया वह वादा पूरा करना जारी रखेगा? तो, मेरा कहना यह है कि भगवान ने इब्राहीम से भूमि का वादा किया था, और वे भूमि की रूपरेखा हैं, और इसलिए यह उनके वादों में से दूसरा है। तीसरा वादा, जो मुझे लगता है कि इसके महत्व में शानदार है, क्योंकि यह हमें याद दिलाता है कि भगवान ने इब्राहीम को एक वाचा का वादा नहीं किया था जैसे कि इब्राहीम के लोग कहानी का अंत थे।

परमेश्वर ने इब्राहीम से एक वाचा का वादा किया ताकि इब्राहीम और उसके वंशज कहानी के प्रस्तावक बनें। यह एक बहुत महत्वपूर्ण मुद्दा है। इज़राइल इसे आसानी से भूल जाता है।

इसे परमेश्वर की स्थिर वाचा वाले लोग बनने के लिए नहीं चुना गया था। इसे परमेश्वर की गतिशील वाचा वाले लोगों के रूप में चुना गया था। इसे राष्ट्रों के लिए आशीर्वाद बनने के लिए चुना गया था।

जैसा कि यशायाह ने अपनी पुस्तक में बार-बार कहा, इस्राएल को राष्ट्रों के लिए प्रकाश बनना था। तो यह वाचा जो परमेश्वर ने इब्राहीम के साथ बनाई थी, जो राष्ट्रों को आशीर्वाद देने पर केंद्रित थी, मेरा मानना है कि, नए नियम में अपना रास्ता बनाता है क्योंकि इसमें एक बहुत शक्तिशाली भावना है जिसमें जिस इज़राइल के बारे में हम अधिनियमों में पढ़ते हैं वह वास्तव में एक प्रकाश

है राष्ट्रों और सुसमाचार को पूरी दुनिया में ले जाया जा रहा है। तो, यह तीसरा बिंदु अपने महत्व में युगांतरकारी है, और चार में से अंतिम, और जिसे भगवान ने अध्याय 17 में बनाया है, अगर मेरी याददाश्त सही ढंग से काम करती है, तो वह यह है कि भगवान ने इब्राहीम से वादा किया था कि राजा उससे आगे निकलेंगे।

इसलिए, अब मेरी समझ यह है कि इब्राहीम की वाचा के आरंभ से ही, राजत्व एक वादा था जो परमेश्वर ने इब्राहीम से किया था और एक वादा था जो इब्राहीम के वंशजों, विशेष रूप से इसराइल राष्ट्र के लिए पूरा किया जाएगा। इसलिए, मैं अपने छात्रों को जो सुझाव देता हूँ वह यह है कि ये वादे बाद की वाचाओं के मूल में हैं जो भगवान इब्राहीम के वंशजों के साथ बनाते हैं। इस प्रकार, उदाहरण के लिए, साइनाइटिक वाचा में, ईश्वर उस वाचा में भूमि और संतान के साथ व्यवहार कर रहा है।

जिस तरह से निर्गमन 1 शुरू होता है वह ऐसा है कि यह संकेत देता है कि भगवान ने इब्राहीम से अपना वादा निभाया है। भूमि उपजाऊ थी; वे बहुत बढ़ गए, और उन्होंने देश को भर दिया। लेकिन, निस्संदेह, निर्गमन हमें याद दिला रहा है कि यह गलत भूमि है।

तो, निर्गमन, संख्या और व्यवस्थाविवरण के वृत्तांत उस भूमि की ओर आंदोलन का विवरण दे रहे हैं जिसका वादा परमेश्वर ने किया था। तो, सिनैटिक वाचा का मैट्रिक्स वे वादे हैं जो भगवान ने इब्राहीम से किए थे। और विशेष रूप से, भूमि और संतान के वादे।

और यह एक जटिल मामला है, और मुझे डर है कि मुझे इससे बचना होगा या हम इसके लिए आवंटित समय में अपना पाठ्यक्रम पूरा नहीं कर पाएंगे। लेकिन यह मेरी थीसिस है कि मूसा पहला राजा है। और इसके बारे में बहुत भ्रम है, और यह जटिल है।

तो, मैं बस इतना कर सकता हूँ कि वास्तव में आपको विचार से परिचित कराऊँ और फिर विचार को रहने दूँ। लेकिन मुझे लगता है कि मूसा पहला राजा था। मुझे लगता है कि मूसा से लेकर जोशुआ तक वंशवादी उत्तराधिकार था।

लेकिन फिर मुझे लगता है कि इजरायल की अवज्ञा के कारण, और तब दैवीय सजा हुई थी जब इजरायल को बिना किसी नेतृत्व के कार्य करने के लिए छोड़ दिया गया था। तो, सिनाइटिक वाचा, प्रसिद्ध मोज़ेक वाचा, अपने मूल में उन वादों से संबंधित है जो ईश्वर ने इब्राहीम से किए थे। फिर, निःसंदेह, उस सिनैटिक वाचा का अनुसरण करते हुए, हमारे पास डेविडिक वाचा है।

और, निःसंदेह, इस वाचा में, परमेश्वर ने दाऊद के वंश के माध्यम से वंशवादी उत्तराधिकार को संस्थागत बनाया। इसलिए स्मरण रखें कि दाऊद से पहले भी एक राजा था, और वह एक राजा था जिसे परमेश्वर ने चुना था। परन्तु परमेश्वर ने शाऊल से कभी वादा नहीं किया, उसने कभी उससे वंशानुगत उत्तराधिकार का वादा नहीं किया।

तो, ऐसा नहीं है कि दाऊद पहला राजा था। डेविड वह राजा है जिसके माध्यम से भगवान ने राजवंशीय उत्तराधिकार का वादा किया था। बेशक, यह नए नियम में एक प्रमुख कारक बन

जाता है क्योंकि सुसमाचार के लेखक, विशेष रूप से मैथ्यू और ल्यूक, लेकिन जॉन भी, यीशु को डेविड के पुत्र के रूप में प्रस्तुत करने पर कुछ हद तक ध्यान केंद्रित करते हैं।

तो, फिर, मेरा आपके लिए प्रस्ताव यह है कि ये तीन वाचाएँ, इब्राहीम, सिनैटिक और डेविडिक वाचा, तीन वादे हैं जो उन वादों को मूर्त रूप देते हैं जो परमेश्वर ने इब्राहीम से किए थे। और फिर वे सभी नई वाचा में अपनी पूर्ति पाते हैं। कहने का तात्पर्य यह है कि, वे नई वाचा में अपनी निरंतरता और अपनी पूर्ति पाते हैं।

दूसरे शब्दों में, संतान का वादा अब न केवल इसराइल के निकटतम क्षेत्र तक विस्तारित है, जैसे कि योना के व्यक्ति में सुसमाचार को नीनवे तक ले जाना, लेकिन अब यह यीशु के कथन में सन्निहित है कि आपके वंशज मिलेंगे सारी दुनिया। यीशु ने संतान की अवधारणा को पूरी दुनिया तक पहुँचाया। इसलिए, हम एक भूमि वादे के बारे में पढ़ते हैं जिसे वैश्विक रूप से समझा जा सकता है और यीशु ने जॉन के सुसमाचार में हमसे क्या वादा किया था, कि यीशु स्वयं, पृथ्वी छोड़कर अपने पिता की उपस्थिति में जा रहे हैं, जिसे यीशु स्वयं तैयार कर रहे हैं हमारे लिए एक जगह.

इसलिए, मुझे लगता है कि भूमि की अवधारणा नए नियम में एक वादे के रूप में जारी है लेकिन इसका विस्तार पूरे विश्व, वास्तव में, अगली दुनिया को भी शामिल करने के लिए किया गया है। इसलिए, उन वादों में से तीसरा जो उसने इब्राहीम से किया था, संतान, भूमि और राष्ट्रों को आशीर्वाद, नए नियम में अपनी अंतिम पूर्ति पाता है क्योंकि, वास्तव में, उन सभी के व्यक्ति में इज़राइल के वंशज हैं -ईसाई यहूदी कहलाते हैं, वे सुसमाचार को पूरी दुनिया में ले जाते हैं। प्रेरितों के काम की पुस्तक तब पूर्ण होती है जब ल्यूक हमें बताकर इसे बंद कर देता है, और इस तरह हम रोम आ गए।

ऐसा लगता है जैसे ल्यूक हमें बता रहा है कि रोम जाकर, सुसमाचार अब पूरी दुनिया में जाने की स्थिति में है। तो, उन वादों में से अंतिम, राजत्व का वादा, इस अर्थ में पूरा हो गया है कि यीशु को सभी सुसमाचारों में प्रस्तुत किया गया है, और वास्तव में, यीशु को सभी पत्रों के साथ-साथ शाही शब्दों में भी पहचाना गया है। और एक अर्थ में, प्रेरितों को ऐसे व्यक्ति के रूप में समझा जा सकता है जो राजा की इच्छा पूरी कर रहे हैं।

और जब आप एक्ट्स जैसी किताब पढ़ते हैं, तो यह हमें याद दिलाती है कि 12 शिष्य यीशु के वादे में व्यस्त थे कि उनमें से प्रत्येक एक आदिवासी क्षेत्र पर शासन करेगा। इसलिए, एक्ट्स यीशु को इज़राइल के राजा के रूप में कुछ मजबूत रंगों में प्रस्तुत करता है। तो यह पूरी बाइबल का एक बहुत ही त्वरित भ्रमण है, लेकिन यह एक ऐसा भ्रमण है जो आपको यह दिखाने के लिए डिज़ाइन किया गया है कि मुझे लगता है कि ये चार वादे बाइबल के बाकी हिस्सों के कथा खंड के लिए महत्वपूर्ण दिशा और संरचना प्रदान करते हैं।

और मैं आपके सामने जो प्रस्ताव रखूंगा वह यह है कि राजत्व उन चार में से एक है। और इसलिए, मेरे लिए यह बताना महत्वपूर्ण है कि राजत्व कोई दूसरा विकल्प या निम्नतर विकल्प नहीं है जैसा कि 1 शमूएल 8 में बताया गया है। राजत्व वास्तव में पूर्ति है, इब्राहीम से किए गए परमेश्वर

के वादों की पूर्ति की शुरुआत है, और इसकी अंतिम पूर्ति स्वयं मसीह के व्यक्तित्व में मिलेगी। तो, इसे ध्यान में रखते हुए, हम 1 सैमुअल 8 में अपने नोट्स पर वापस जाएंगे। वास्तव में, हम अपने नोट्स में वापस जाएंगे।

मेरे कक्षा नोट्स में, न्यायाधीशों का अंत आता है। मुझे आपको बताना चाहिए, वास्तव में, मैं ओटी सर्वेक्षण नहीं पढ़ा रहा हूँ, इसलिए मैं आपको पुराने नियम का सर्वेक्षण पढ़ाने से खुद को बचाने की कोशिश कर रहा हूँ, जबकि मैं आपको पृष्ठभूमि सिखाने की कोशिश कर रहा हूँ। जजों की किताब के अंत में दो कहानियाँ, इस बात के पुख्ता संकेतक हैं कि कालानुक्रमिक रेखा पर ये दोनों कहानियाँ जजों की शुरुआत में घटित हुईं।

लेकिन उन्हें आपको धार्मिक धर्मत्याग के लिए तैयार करने के लिए न्यायाधीशों के अंत में टैग किया गया है, जिसके बारे में हम 1 शमूएल 1-5 में पढ़ेंगे, साथ ही बिन्यामीन के गोत्र से इसराइल के पहले राजा की पसंद के बारे में भी पढ़ेंगे। तो शायद आपको वह भयानक कहानी याद होगी - शायद पूरे पुराने नियम की सबसे भयानक कहानी - कि लेवी के पास एक उपपत्नी है, और वह उससे भाग जाती है। वह बेथलहम जाती है।

वह उसे लेने जाता है। वे बेंजामिन में उसके घर वापस जा रहे हैं। वे गिबा, यरूशलेम में रुकते हैं।

वे यरूशलेम में रुकने वाले हैं। वे गिबा में रुकते हैं, और वहां लेवी की उपपत्नी की हत्या कर दी जाती है और उसका यौन शोषण किया जाता है। लेवी ने उसके बारह टुकड़े कर दिये।

वह उसके शरीर का एक हिस्सा हर जनजाति में भेजता है ताकि प्रत्येक जनजाति को एक भयानक अनुस्मारक मिले कि एक भयानक अपराध किया गया है। बिन्यामीन के गोत्र को दंडित करने के लिए उन्हें एक साथ आने की जरूरत है। ठीक है, आपको याद होगा कि उस महान गृहयुद्ध में बेंजामिन का सफाया हो गया था, जिससे केवल कुछ सौ पुरुष बचे थे, कुछ सौ महिलाएं और पुरुष बचे थे।

वास्तव में, उनके लिए पत्नियाँ अन्य जनजातियों से खरीदी जाती थीं। यह सब कहने के बाद, यह शायद कोई दुर्घटना नहीं है कि बिन्यामीन जनजाति का सफाया हो गया है, या वस्तुतः नष्ट हो गया है। जब हम 1 शमूएल की पुस्तक तक पहुँचते हैं और पहला राजा चुना जाता है, तो शाऊल बिन्यामीन के गोत्र से होता है।

ऐसा लगता है जैसे गिबा की जगह की प्रमुखता, जो शाऊल का गृहनगर है, और यह तथ्य कि शाऊल एक बिन्यामीन है, उन कारकों को हमें राजशाही के रिकॉर्ड के लिए तैयार करने के लिए व्यवस्थित किया जा रहा है। यदि आप उस बिंदु तक मेरे साथ हैं, तो मैं, यदि संभव हो तो, 1 सैमुअल की शुरुआत से शुरुआत करना चाहूँगा। जैसे ही हम 1 शमूएल 8 में पहले राजा की पसंद पर पहुँचते हैं, इस्राएल के बुजुर्ग शमूएल के पास आते हैं और शमूएल को घोषणा करते हैं कि वे एक राजा चाहते हैं।

और शमूएल उनके अनुरोध को पापपूर्ण समझता है। भगवान सहमत हैं कि उनका अनुरोध पापपूर्ण है, और इसलिए, फिर भी, भगवान सहमत हैं कि उनके पास एक राजा होगा। और

इसलिए, इस अनुच्छेद की औसत समझ, कम से कम कई हलकों में, यह है कि राजत्व बुरा है, लेकिन भगवान इस पर केवल इसलिए सहमत हुए क्योंकि भगवान जानते थे, अंततः, कि इसराइल का राजा, जिसका नाम यीशु था, उस वंश से आएगा।

तो, मैं जो करने जा रहा हूँ वह है लगभग 20 मिनट का समय और आपको 1 शमूएल 1 की सामग्री के माध्यम से वापस ले जाना ताकि आपको यह दिखाया जा सके कि 1 शमूएल 1 और निम्नलिखित अध्याय, अध्याय 8 पर पहुंचने से पहले, हमारे सामने महत्वपूर्ण सामग्री हैं। अध्याय 8 और राजा के अनुरोध की व्याख्या करने का प्रयास शुरू करें। तो, 1 शमूएल 1 में हमारे पास जो रिकॉर्ड है वह हमें बताता है कि कैसे शमूएल इसराइल में एक नेता बन गया, भगवान ने उसे कैसे चुना, और वह तम्बू में कैसे उठाया गया। और इसलिए, 1 शमूएल के बारे में जो बातें बहुत दिलचस्प हैं उनमें से एक यह है कि हमने पूरी किताब को पढ़ा... ठीक है, हमने किताब को नहीं पढ़ा, लेकिन अगर हमने न्यायाधीशों की पूरी किताब को पढ़ा होता, तो आपने इसे पढ़ लिया होता देखा तम्बू का एक बार भी उल्लेख नहीं किया गया है।

अब, 1 शमूएल ने न केवल तम्बू से शुरुआत की, बल्कि तम्बू का प्रदर्शन भी किया जा रहा है। हमें तम्बू में पता चलता है कि एक महायाजक है, और हमें पता चलता है कि उस महायाजक के दो बेटे, एली, मेरा मतलब है होप्नी और पीनहास, पूरी तरह से भ्रष्ट हैं। जबकि एली स्वयं एक सभ्य व्यक्ति प्रतीत होता है, होफनी और फिनेहास पूरी तरह से भ्रष्ट हैं।

आप देखिए, मित्रो, यह हमें बता रहा है कि इसराइल की समस्याओं का उत्तर पौरोहित्य नहीं है क्योंकि हम जिसके बारे में पढ़ रहे हैं वह यह है कि पौरोहित्य भ्रष्ट है। उसके बेटे भ्रष्ट हैं, और एली इसके बारे में कुछ नहीं करता। इसलिए, हम यह पता लगाने आए हैं, यदि आपको पवित्र विवाह पर हमारी चर्चा याद है और प्रजनन क्षमता पैदा करने के लिए उस यौन क्रिया को जादुई तरीके से कैसे डिजाइन किया गया था, तो, एली के दो बेटे, होफनी और फिनेहास, उन महिलाओं के साथ यौन गतिविधियों में लगे हुए हैं जो आने वाली थीं। तम्बू में पूजा करो।

खैर, यह स्पष्ट रूप से कनानी प्रजनन प्रथा है जो दो महत्वपूर्ण पुजारियों द्वारा संचालित की जा रही है जो तम्बू में नियुक्त या तैनात हैं। यह अपमानजनक है, और फिर भी एली इसके बारे में कुछ नहीं करता है। खैर, पाठ हमें बता रहा है, इसलिए, 1 शमूएल में बातें - मुझे बात स्पष्ट करने दीजिए।

अगर मैं हिलू तो शायद आपका ध्यान आकर्षित कर सकूँ। मुझे लगता है कि यह हमें जो इंगित कर रहा है उसका प्रभाव, यदि संभव हो तो, यह है कि 1 शमूएल 1:1-3 में बातें न्यायाधीशों से भी बदतर हैं। क्योंकि 1 शमूएल 1:1-3, यानी अध्याय 1-3 में हम जो पढ़ते हैं, वह यह है कि तम्बू, तम्बू, परमपवित्र स्थान, को एक कनानी धार्मिक अभयारण्य में बदल दिया गया है।

यह स्वीकार्य नहीं है और इसे बर्दाश्त नहीं किया जा सकता। इसलिए, हमने यह भी पढ़ा कि पलिशती बिन्यामीन के गोत्र पर दबाव डाल रहे हैं।

शायद मुझे आपको हमारे मानचित्र क्षेत्र में यह दिखाने की आवश्यकता होगी कि बेंजामिन की जनजाति कहाँ है। तो, बिन्यामीन की जनजाति, यदि आप मृत सागर की चोटी पाते हैं, और फिर आप बस एक पूर्व-पश्चिम रेखा खींचते हैं, तो यहां यरूशलेम है। खैर, बिन्यामीन की जनजाति एक छोटी जनजाति है जो उस क्षेत्र को बनाती है।

यहीं पर बेंजामिन हैं। हमने जो पढ़ा है वह यह है कि केंद्रीय पहाड़ी देश में जहां बिन्यामीन है, और न केवल बिन्यामीन बल्कि यहूदा और एप्रैम, पलिशती इसराइल के पूर्ण केंद्र में दबाव डाल रहे हैं, और इसराइली, न्यायाधीशों की तरह चिल्ला रहे हैं। इस प्रकार, इस्राएली चिल्ला रहे हैं, और होप्पी और पीनहास ने उन्हें उनके शत्रुओं से छुड़ाने की एक योजना बनाई।

न्यायियों की पुस्तक में, जब वे चिल्लाते हैं, तो परमेश्वर उन्हें बचाता है। यहाँ, होफ़नी और फ़िनहास चीज़ों को अपने हाथों में लेते हैं। वे भगवान के पवित्र सन्दूक को लेते हैं और, कनानी धार्मिक शैली में, इसे एक जादुई कुलदेवता में बदल देते हैं। इसलिए, यह जानकर अच्छा लगा कि यदि आप मेरी कला पर हंसेंगे, तो मुझे यह नहीं सुनना पड़ेगा।

मैं इसराइली सैन्य गठन को तीन सैन्य इकाइयों में रखने जा रहा हूँ क्योंकि अक्सर इसी तरह से उन्होंने अपनी सैन्य इकाइयों का गठन किया है। तो, मैं इसे इस तरह तीन सैन्य इकाइयों में डालने जा रहा हूँ। कनानी और मिस्र दोनों स्रोतों से हम जो जानते हैं वह यह है कि जब वे युद्ध में जाते थे, तो धार्मिक पदाधिकारी और पुजारी यहां से बाहर होते थे, और वे अपने देवता की धार्मिक मूर्ति लेकर सामने होते थे।

यदि मेरे पास समय होता तो मैं आपको मिस्र की कला का एक उदाहरण दिखाता। हम जानते हैं कि यह किया गया था, और जब आप भविष्यवक्ता आमोस के पास जाते हैं, तो आमोस हमें 5वें अध्याय में याद दिलाता है। आश्चर्यजनक रूप से, 5वें अध्याय में, वह हमें याद दिलाता है कि जब इस्राएलियों ने जंगल में मार्च किया था तो उन्होंने यही किया था। अपनी घोर मूर्तिपूजा में, इस्राएली भी वही काम कर रहे थे।

खैर, एली और होफनी इस बुतपरस्त मॉडल की नकल करते हैं, सिवाय इसके कि भगवान की मूर्ति के बजाय, वे सन्दूक को अपने सामने रखते हैं। लेकिन सन्दूक एक देवता की छवि होने के उद्देश्य को पूरा करता है, और इसलिए वे युद्ध में जाते हैं। यह इतना भयानक है कि मैं बस रुककर इसे फिर से कहने के लिए मजबूर हो रहा हूँ। सबसे पहले, वे तम्बू में कनानी यौन प्रजनन संबंधी चीज़ों का अभ्यास कर रहे थे।

दूसरे, वे युद्ध के लिए कनानी धार्मिक गतिविधियों का अभ्यास कर रहे हैं। ये जजों से भी बदतर है। और इसलिए, वे युद्ध में जाते हैं, और आश्चर्य की बात नहीं है कि भगवान उनकी सहायता नहीं करते हैं।

लड़ाई हार गई है। इस्राएलियों को परास्त कर दिया गया। होप्पी और पीनहास युद्ध में मारे गए।

और जब एली ने तम्बू में यह समाचार सुना, तो वह पीछे की ओर गिर पड़ा, और उसकी गर्दन टूट गई, और वह मर गया। इस अविश्वसनीय रूप से भयावह स्थिति में इज़राइल एक राजा की मांग

करता है। अब, कल्पना में, यह वह सन्दूक है जो बन्धुवाई में जाता है, लेकिन ईश्वर इस्राएल को धार्मिक संकेत दे रहा है कि वह राजा है, और इसलिए बाइबिल का पाठ इस तथ्य को एक बड़ा संकेत देता है कि ईश्वर पलिशियों के बीच बीमारी भेजता है, और वे बीमारी से इतने पीड़ित हो गए कि उन्होंने पहचान लिया कि इस्राएल का परमेश्वर सन्दूक के माध्यम से उनके बीच में मौजूद है, और वे सन्दूक को अपने घर वापस भेज देते हैं।

तो, विडंबना यह है कि भगवान ने बिना किसी मानवीय सहायता के खुद को निर्वासन से बाहर निकाल लिया है, और वह मंदिर में लौट आए हैं। ठीक है, यह कहानियों का एक भयानक सेट है। और उन परिस्थितियों में जिनका मैंने अभी आपके लिए वर्णन किया है, हमारे पास इस बात की पृष्ठभूमि है कि इस्राएलियों ने एक राजा की मांग क्यों की।

मेरा अनुभव वस्तुतः सार्वभौमिक रहा है। लोग 1 शमूएल अध्याय 8 में आते हैं जब इस्राएली एक राजा की मांग करते हैं, और वे अनुरोध का व्यंग्यपूर्ण चित्रण करते हैं जैसे कि ये लोग दुष्ट हों। खैर, उनका अनुरोध पापपूर्ण है।

लेकिन ऐसा इसलिए नहीं है क्योंकि राजत्व खराब है। ऐसा इसलिए है क्योंकि वे विशेष रूप से पूछते हैं। हमारे आखिरी टेप में, हम आपके साथ व्यवस्थाविवरण 17 के बारे में बात करते हैं, और कैसे इस्राएल के राजा, मूसा ने लिखा है, जब आप देश में आते हैं, और आप एक राजा की तरह अन्य सभी राष्ट्रों की तरह पूछते हैं, भगवान चेतावनी देते हैं वे उसके खिलाफ हैं।

खैर, जब आप 1 शमूएल 8 से सटीक शब्द पढ़ते हैं, तो इस्राएली शमूएल से कहते हैं, हमें अन्य सभी राष्ट्रों की तरह एक राजा दे दो। जिस बात ने उनके अनुरोध को पापपूर्ण बना दिया, वह अन्य सभी राष्ट्रों की तरह एक राजा के लिए कम और एक राजा के लिए अधिक मांग करना था। अब, निश्चित रूप से, वे हताश हैं।

पलिशती उनके द्वार खटखटा रहे हैं। वे पूरी तरह से असंगठित हैं। वे बैरल के बिल्कुल निचले स्तर पर हैं।

और हमने पिछले वीडियो में जो सुझाव दिया था उसे करने के बजाय, केवल पश्चाताप करना और फिर उनकी सहायता के लिए भगवान का आशीर्वाद प्राप्त करना, इसके बजाय, वे चीजों को अपने हाथों में ले लेते हैं। खैर, वह बुतपरस्ती है। चीजों को अपने हाथों में लेकर, वे वास्तव में केवल समस्याएं पैदा कर रहे हैं।

लेकिन जो समस्या मैं आपके सामने रख रहा हूँ वह राजत्व नहीं है। राजत्व स्वयं ईश्वरीय योजना है। इसलिए, जिन चीजों को मैं हर किसी के लिए प्रचारित करता हूँ, उनमें से एक यह सरल कथन है जो मुझे सुनने को मिलता है।

यदि राजत्व स्वाभाविक रूप से बुरा है, तो भगवान इसके लिए सहमत क्यों हुए? भगवान न केवल सहमत हुए, बल्कि पहले राजा को चुनने के लिए भगवान ने काफी प्रयास किये। इसलिए, मैं हमें जो प्रस्ताव दे रहा हूँ वह यह है कि जब हम प्राचीन निकट पूर्व में राजत्व को समझते हैं, तो यह हमें

उन सभी चीजों की सही ढंग से व्याख्या करने में मदद करता है जो राजत्व के आसपास घूमती हैं। इसलिए, राजत्व के बारे में सार्वभौमिक रूप से सकारात्मक दृष्टि से सोचा गया।

अब, ऐसा होने का कारण यह था कि प्राचीन निकट पूर्व में राजाओं को वे लोग माना जाता था जिन्हें देवताओं ने चुना था। और इसलिए, जब तक राजा ने देवता के प्रति वफादार राजा बनना चुना, तब तक यह एक अच्छी बात थी। हालाँकि, राजत्व खतरनाक था, यदि आप इसे अपने आस-पास के सभी देशों की तरह करने जा रहे हैं।

और इसलिए, समस्या का मूल यही है। तो, यह टिप्पणियों का एक सेट है। इससे पहले कि हम आपके लिए अपनी कक्षा की नोटबुक में अपने नोट्स पर वापस लौटें, मैं आपको टिप्पणियों के दूसरे सेट पर ले चलता हूँ।

वो क्या हो सकता है? लोग शमूएल के पास आए, और उन्होंने शमूएल से कहा, हमारे लिये एक राजा दे। मैं बिल्कुल परिच्छेद की ओर मुड़ता हूँ। इसलिए, वे शमूएल के पास आए, और उन्होंने अध्याय 8, श्लोक 1 में कहा कि शमूएल बूढ़ा था।

ऐसा तब हुआ जब शमूएल बूढ़ा हो गया और उसने अपने पुत्रों को इस्राएल पर न्यायी नियुक्त किया। अब, वह छोटी सी कविता आसानी से हमारे ध्यान से बच सकती है क्योंकि शमूएल पर अपने बेटों को नेता नियुक्त करके अपने लिए राजशाही बनाने का आरोप लगाया जा सकता है जो स्वचालित रूप से उसका अनुसरण करते हैं। इसलिये उसने अपने पुत्रों को इस्राएल पर न्यायी नियुक्त किया।

आयत 2 में, बड़े का नाम योएल था, और दूसरे का अबियाह था, और वे बेशेबा में न्याय कर रहे थे। हालाँकि, उसके बेटे उसके रास्ते पर नहीं चले, बल्कि बेईमानी से कमाई करने लगे, रिश्वत लेने लगे और न्याय बिगाड़ने लगे। ठीक है।

एक बार फिर, मुझे इस बात पर आश्चर्य होता है कि कैसे ये छंद, कम से कम हर समय जब मैंने इस पर चर्चा या प्रस्तुतीकरण सुना है, प्रिंट में इतना नहीं, लेकिन उपदेशात्मक शैली में प्रस्तुत किया गया है, हम केवल छंद 1 से 3 तक को अनदेखा कर देते हैं जैसे कि वे थे। जोर देने के लिए इसे पहले रखें। इसलिए, उन्हें वहां पहले रखा गया है क्योंकि वे तीन समस्याओं की पहचान करते हैं। एक, सैमुअल बूढ़ा है और जल्द ही मरने वाला है।

दो, शमूएल ने अपने पुत्रों को नियुक्त किया है। तकनीकी तौर पर उसे ऐसा करने का कोई अधिकार नहीं है। और तीन, उनके बेटे भ्रष्ट हैं।

ये महत्वपूर्ण विचार हैं क्योंकि हम निम्नलिखित पर गौर करते हैं। तब इस्राएल के सब पुरनिये इकट्ठे होकर रामा में शमूएल के पास आकर उस से कहने लगे, तू बूढ़ा हो गया है। तेरे पुत्र तेरे मार्ग पर नहीं चले, अब तू हमारे लिये एक राजा नियुक्त कर, जो सब जातियों के समान हमारा न्याय करे। ठीक है, आप देखेंगे कि जो विशिष्ट कारण बताया गया है वह यह है कि सैमुअल मरने वाला है, और वे उसके भ्रष्ट बेटों के साथ नहीं फंसना चाहते हैं।

नेतृत्व में बदलाव चाहने के ये दो बिल्कुल अच्छे कारण हैं। इसलिए, वे उससे एक राजा नियुक्त करने के लिए कहते हैं, और पाठ हमें बताता है कि यह बात शमूएल की दृष्टि में अप्रसन्न थी। वाल्टन ने अपनी अद्भुत पाठ्यपुस्तक, ए सर्वे ऑफ़ इज़राइल हिस्ट्री में सुझाव दिया है कि शायद सैमुअल की नाराजगी इसलिए है क्योंकि वह खुद को अगले राजा के रूप में देखता था।

आखिरकार, शमूएल ने अपने पुत्रों को उसका अनुसरण करने के लिए नियुक्त किया। जो भी मामला हो, इस सारी चर्चा में वह महत्वपूर्ण लेकिन सरल बिंदु गायब है जो भगवान ने श्लोक 7 में कहा है। येपेत ने शमूएल से कहा, लोगों की आवाज सुनो कि वे तुमसे क्या कहते हैं। तो, इस समय, भगवान उनसे कह रहे हैं, उन्हें एक राजा दो।

खैर, ऐसा क्यों होगा? मैं पूर्ण निश्चितता के साथ नहीं कह सकता, लेकिन मैं आपसे कह सकता हूँ कि मुझे लगता है कि ऐसा इसलिए है क्योंकि ईश्वर के लिए इब्राहीम और इब्राहीम के वंशजों से किए गए अपने वादों को निभाने के लिए राजत्व आवश्यक है। ठीक है, यह जानकारी का एक लंबा सफर था, लेकिन अब मैं आपको बताता हूँ कि अन्य सभी देशों की तरह राजत्व में क्या गलत है। जब हम शमूएल में निम्नलिखित छंद पढ़ते हैं, तो शमूएल उन्हें सीधे तौर पर चेतावनी देता है कि अन्य सभी राष्ट्रों की तरह, राजत्व का क्या अर्थ होगा।

और वह उन्हें चार चेतावनियाँ देता है। वहाँ एक स्थायी सेना होगी जिसमें ड्राफ्टीज़ और पेशेवर योद्धा और अभिजात वर्ग शामिल होंगे। आइए, मुझे श्लोक 11 से 12 तक पढ़ने को कहें।

यह उस राजा की रीति और रीति होगी जो तुम पर राज्य करेगा। वह तेरे पुत्रों को लेकर अपने रथों और सवारों में बैठा लेगा, और वे उसके रथों के आगे आगे दौड़ेंगे, और अपने लिये सहस्र और पचासों पर प्रधान नियुक्त करेगा। दूसरे शब्दों में, वह उन्हें जिस चीज़ के बारे में चेतावनी दे रहा है वह यह है कि एक स्थायी सेना होगी जिसका हिस्सा आपके बेटों को बनना होगा।

दूसरे, उसने पद 14 में उन्हें चेतावनी दी कि एक राजा लोगों की भूमि जब्त कर लेगा और उसे अपने राजा के सेवकों को दे देगा। यहां आठ या दस टेपों के लिए, मैं आपको बता रहा हूँ कि मेसोपोटामिया में आम प्रथा यह थी कि राजा के पास सारी जमीन होती थी। अच्छा, इस्राएल का राजा कौन है? यह भगवान है।

इज़राइली परंपरा में, ईश्वर राजा है; परमेश्वर सारी भूमि का स्वामी है, और भूमि केवल उधार दी गई है और बेची नहीं जा सकती। खैर, सैमुअल ने उन्हें चेतावनी दी कि राजत्व की प्राचीन निकट पूर्वी परंपरा यह है कि राजा उनकी भूमि चुरा लेगा और इसका उपयोग नौकरों से वफादारी खरीदने के लिए करेगा। अहाब और नाबोत की कहानी देखें जब अहाब ने उसके अंगूर के बगीचे को चुरा लिया।

तीसरा, पद 15 और 17ए में सैमुअल ने उन्हें चेतावनी दी कि राजा उन पर भारी कर लगाएगा। स्थायी सेनाएँ महँगी हैं, शाही महल महँगे हैं, और प्रशासनिक बुनियादी ढाँचा बनाना महँगा है। आखिरी बात जिसके बारे में उसने उन्हें चेतावनी दी है वह यहां 1 सैमुअल 8 में है कि वह उन्हें शव श्रम करने के लिए मजबूर करेगा।

तो, इसका मतलब यह है: हमारे पास इस टेप पर जाने के लिए बहुत कुछ नहीं है, इसलिए हम इसे धीरे-धीरे बंद करना शुरू करेंगे। कार्वी श्रम एक ऐसी चीज़ है जो कृषि अर्थव्यवस्था में हो सकती है। तो, यहाँ बताया गया है कि कार्वी लेबर क्या है।

प्राचीन इज़राइल में, अब आपको याद है कि इज़राइल 3,000 फीट ऊंची कृषि भूमि हो सकती है, और यह वास्तव में समुद्र तल से नीचे की कृषि भूमि हो सकती है। लेकिन आम तौर पर, इज़राइल में, खेती फरवरी के अंत या मार्च की शुरुआत में शुरू होती है जब ज़मीन की जुताई की जाती है। और फिर जुताई के बाद, वे जितनी जल्दी हो सके बीज डालने की कोशिश करेंगे ताकि वे बाद की बारिश का भी लाभ उठा सकें।

उत्तरार्द्ध वर्षा उस वर्षा का वर्णन करने वाला शब्द है जो उस समय होती है जिसे हम वसंत कहते हैं। उनके लिए, यह बाद की बारिश है क्योंकि शुरुआती बारिश वह बारिश है जो अक्टूबर के अंत और नवंबर में होती है। इसलिए बाद की बारिश से भीगने के लिए बीज को समय पर जमीन में गाड़ना महत्वपूर्ण है क्योंकि इससे बीज को अंकुरित होने में मदद मिलती है।

यदि आप अपना बीज जमीन में डालते हैं और वह गीली नहीं है, तो आपका बीज अंकुरित नहीं होगा। या यह बहुत अच्छी तरह से अंकुरित नहीं होगा। इसलिए, वे अपना बीज ज़मीन में डालेंगे।

फिर फसलें आएंगी. वे अपनी फसलें जोतेंगे। और फिर मई में किसी समय, वे अपनी फसल काटेंगे।

ठीक है, उस परिदृश्य में, आप स्पष्ट रूप से देख सकते हैं कि जिसे हम जून, जुलाई, अगस्त, सितंबर के गर्मियों के महीने कहते हैं, वे पूरे हो चुके हैं। तो कार्वी श्रम एक ऐसी घटना थी जब एक बार जब उनकी फसलें पक जाती थीं, तो राजा उन्हें पूरी गर्मियों में अपने लिए काम करने के लिए मजबूर कर सकता था। और साल में चार महीने के लिए, वे गुलाम मजदूर बन जाते थे, ऐसा कहा जा सकता है।

खैर, ये चार चीज़ें हैं जिनके बारे में भगवान ने उन्हें चेतावनी दी थी क्योंकि ये चारों चीज़ें हैं जो राजा, अपने आसपास के सभी राष्ट्रों की तरह करते हैं। परमेश्वर ने उन्हें इन चार बातों के विषय में सचेत किया। जब आप बाइबिल का पाठ पढ़ते हैं, तो सुलैमान ने इन चारों चीज़ों का बार-बार उल्लंघन किया।

तो परमेश्वर जो कर रहा था वह इस्राएलियों को चेतावनी देने की कोशिश कर रहा था, अब जब आप अंततः एक राजा प्राप्त करने के लिए तैयार हैं, अब जब आप अंततः एक राजा का अनुसरण करने के लिए तैयार हैं, तो मैं आपको चेतावनी देता हूँ कि आपको किस प्रकार का राजा मिल सकता है। और इसलिए, भगवान उन्हें चेतावनी देते हैं क्योंकि भगवान अन्य सभी राष्ट्रों की तरह राजा नहीं चाहते हैं। एक बात के लिए, इसराइल की परंपरा में धार्मिक रूप से, एक राजा वास्तव में केवल भगवान का विकल्प है।

ईश्वर वस्तुतः इस्राएल का एकमात्र राजा है, और इस्राएल का राजा केवल एक जागीरदार या स्थानापन्न है। तो, इतना कहने के बाद, मुझे आशा है कि मैंने आपको एक राजा की पसंद को

समझाने वाले बिंदु का एक प्रशंसनीय खुलासा कर दिया है; वह चुनाव चाहे कितना भी अपूर्ण क्यों न हो, वास्तव में यह हमें यह दिखाने के कथा के तरीके का हिस्सा है कि ईश्वर उस दिव्य योजना को प्रकट कर रहा है जिसका वादा उसने इब्राहीम से किया था, और ईश्वर उन्हें महान राजा देने जा रहा है। तो, इसे ध्यान में रखते हुए, हमें राजशाही की रक्षा दी गई है।

तो, इसे ध्यान में रखते हुए, मैं आपको बता सकता हूँ कि हम उस चीज़ को शुरू करने के लिए तैयार हैं जिसे संयुक्त राजशाही कहा जाता है, 1050 से 931 तक की एक छोटी अवधि, जिसमें तीन बाद के शासनकाल शामिल थे।

शाऊल, डेविड और सुलैमान के शासनकाल को बाइबिल पाठ में लगभग इस तरह प्रस्तुत किया गया है मानो वे इब्राहीम से किए गए ईश्वर के वादों को पूरा करते हों। तो, इब्राहीम से किए गए परमेश्वर के वादे वास्तव में पूरे हो रहे हैं या नहीं, यह इज़राइली इतिहास का स्वर्णिम काल है।

यह वह समय है जब इज़राइल ने अपने एकमात्र और सबसे बड़े पैमाने पर शासन किया था। इसलिए, जैसा कि हम राजत्व को देखते हैं, और हम विशेष रूप से सुलैमान के शासन को देखते हैं, मैंने आपके लिए सुलैमान के शासन के कई गुणों को सूचीबद्ध किया है जो राजत्व के उल्लंघन की विशेषता बताते हैं। सुलैमान का चित्रण किया गया है, और यह उस तरह से शुरू नहीं होता है, लेकिन उसे अन्य सभी राष्ट्रों की तरह सर्वोत्कृष्ट राजा के रूप में चित्रित किया गया है।

उस सूची को देखें जो मैंने हमें यहां दी है। एक है विवाह द्वारा विदेशी राष्ट्रों के साथ राजनीतिक गठबंधन। हम सभी जानते हैं कि सुलैमान की हजार पत्नियों में से कम से कम 300 ने राजनयिक विवाह किये थे।

यह आस-पास के देशों के साथ संधि गठजोड़ बनाने का एक कार्यात्मक, शायद शानदार तरीका भी हो सकता है, लेकिन बाइबिल के नजरिए से, इसकी बहुत बड़ी कीमत चुकानी पड़ी क्योंकि जब आप किसी दूसरे देश के साथ संधि में प्रवेश करते हैं, तो आपसी सहमति होती है। एक दूसरे के देवता। दूसरे, फ़िलिस्तीन में कनानी और हिब्रू दोनों आबादी को खुश करने के प्रयास में धार्मिक समन्वयवाद की ओर रुझान है। समन्वयवाद एक फैंसी शब्द है जो इस तरह की पूरी तरह से अलग चीजों को एक इकाई में विलय कर देता है।

सुलैमान के पास एक राजनीतिक समस्या थी, अर्थात्, चूंकि इस्राएलियों ने कनानियों को नष्ट नहीं किया था, तब केवल इब्रानियों की ही नहीं, बल्कि कनानियों की भी एक बड़ी आबादी थी। इसका मतलब था, बीच के रास्ते पर चलने के लिए, सुलैमान को ऐसी प्रथाएँ बनाने की ज़रूरत थी जो कनानियों, या उसके अनुसार उसकी ज़रूरत, और हिब्रू आबादी दोनों के लिए स्वीकार्य हों। इसलिए, हिब्रू धर्म और बाल और अन्य देवताओं के कनानी पंथ दोनों में भागीदारी दिन का क्रम बन गई।

सुलैमान के राजत्व की गुणवत्ता भगवान की पूजा की शुद्धता नहीं थी, बल्कि राज्य के झंडे के नीचे इन दोनों धर्मों का मिश्रण और मिश्रण था। तीसरा, पुरानी जनजातीय सीमाओं और वफादारियों

को आसान बनाने के प्रयास में 12 प्रशासनिक जिलों में इज़राइल का भौगोलिक पुनर्गठन। इस तीसरे बिंदु से हमारा तात्पर्य यह है।

सुलैमान प्रतिभाशाली नहीं तो कुछ भी नहीं था। हालाँकि, कभी-कभी प्रतिभाशाली लोग सोचते हैं कि वे जितने हैं उससे कहीं अधिक होशियार हैं। सुलैमान ने माना कि न्यायाधीशों में तीन शताब्दियों की भयानक समस्या, भयानक राजनीतिक समस्या जनजातीयवाद थी।

इसलिए, सुलैमान ने पुराने 12-जनजाति प्रारूप को लिया और इसे बदल दिया ताकि 12 प्रशासनिक जिले हों, लेकिन जब आप जिलों की सीमाओं को देखते हैं, तो आप देखते हैं कि जिले आदिवासी रेखाओं के साथ नहीं हैं। सच तो यह है कि सुलैमान ने जिन जिलों का निर्माण किया, वे जनजातीय रेखाओं को मिटाने के लिए चुने गए प्रतीत होते हैं। तो, उनके 12 जिले आदिवासी नहीं हैं, लेकिन वास्तव में आधुनिक राजनीति में सत्ता संरचनाओं को नष्ट करने के लिए डिज़ाइन किए गए हैं।

चौथा, राज्य नौकरशाही का प्रसार हुआ। हे भगवान। आइए मैं आपको पाठ समझाता हूँ।

सुलैमान के महल को बनने में मंदिर से दोगुना समय लगा। सुलैमान ने प्रतिदिन हजारों लोगों को खाना खिलाया। वास्तव में, नौकरशाही और संपत्ति ऐसी थी कि यदि आप गिनें कि सुलैमान के शासनकाल में सोना शब्द कितनी बार आया है, तो सोना शब्द पहले और दूसरे राजाओं की तुलना में सुलैमान के शासन के अध्यायों में अधिक दिखाई देता है। संयुक्त।

तो, नौकरशाही को भुगतान करना होगा, और वहां सोना आएगा। पाँचवाँ, भव्य निर्माण परियोजनाएँ जिनमें गैर-हिब्रू और हिब्रू दोनों निवासों के बीच दास श्रम की आवश्यकता थी। अब, जब हम पाठ को ध्यान से पढ़ते हैं तो हमें पता चलता है कि सुलैमान ने सचमुच कनानियों को गुलाम बना लिया था, जबकि जैसा कि मैंने आपको बताया था, उसने इब्रियों को कोरवी श्रम करने के लिए मजबूर किया था।

लेकिन फिर भी, सुलैमान ने अपनी सभी प्रजा को राज्य की सेवा करने के लिए मजबूर किया। छठा, अंतर्राष्ट्रीय व्यापार और वाणिज्य के परिणामस्वरूप यरूशलेम में बुतपरस्त राजनीतिक और धार्मिक विचारधारा का प्रवाह हुआ। सोलोमन एक अंतर्राष्ट्रीयवादी थे, और अंतर्राष्ट्रीयतावाद का अर्थ था कि व्यक्ति को परिष्कृत होना चाहिए और अन्य विचारधाराओं को अपनाना चाहिए।

सुलैमान ऐसा करने में बहुत तेज़ था। अंत में, सुलैमान की सैन्य शक्ति के उपग्रह राज्यों का विद्रोह विदेशी श्रद्धांजलि के नुकसान के साथ कम हो गया, क्योंकि राजस्व की भरपाई इस्राएलियों के बढ़ते कराधान से हुई थी। तो, यह कहने का मतलब यह है कि सुलैमान का राज्य लगभग उसी तरह ढह जाएगा जिस तरह अन्य सभी अति-केंद्रीकृत राज्यों का पतन हुआ था।

प्राचीन काल के ये सभी राज्य अति-केंद्रीकृत थे क्योंकि राजत्व के लिए यही खतरा है। सोलोमन एक शीर्ष-भारी नौकरशाही थी। और इसलिए जब सुलैमान मर जाता है, और लोग देख सकते हैं कि वह मरने वाला है क्योंकि वह शमूएल जैसा बूढ़ा हो जाता है, तो उसका साम्राज्य जल्दी से बिखर जाता है।

इसलिए, जैसे ही हम आज इस टेप को समाप्त करते हैं, हम यह स्पष्ट कर रहे हैं कि यह बिल्कुल वही हो गया है जो भगवान ने कहा था कि वह नहीं चाहता था और स्वीकार नहीं करेगा। यह अन्य सभी राष्ट्रों की तरह राजत्व नहीं बल्कि राजत्व बन गया। इसमें बस एक नौकरशाही घटना के रूप में जनजातीयवाद का स्थानांतरण था जो काम नहीं करता है एक नौकरशाही घटना के रूप में राजत्व के लिए जो काम नहीं करता है।

तो, इसके साथ, हम कुछ शब्द कहेंगे। अगले टेप पर, मैं आपको बाइबिल के कुछ साक्ष्य दिखाने जा रहा हूँ जो दिखाते हैं कि कैसे भगवान ने उत्पत्ति के दौरान और इसी तरह राजत्व के बारे में भविष्यवाणियाँ कीं। और फिर, हम अपना ध्यान विभाजित राजशाही की ओर लगाएंगे।

आपके ध्यान देने के लिए धन्यवाद!

यह पुराने नियम की पृष्ठभूमि पर अपने शिक्षण में डॉ. डॉन फाउलर हैं। यह सत्र 16 है, राजत्व का धर्मशास्त्र।